रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' सेगमेंट– **कड़ी–29**

प्राचीन पुस्तकों में कृत्रिम बुद्धि

आलेख– डा. अरविन्द दुब

संकल्पना और समन्वय डॉ बी के त्यागी

सूत्रधार– दोस्तो विज्ञान रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' की पिछली कड़ी में आपने सुना कि कृत्रिम बुद्धि युक्ति युक्त मशीनों की अवधारणा काफी नई है पर संयोग से हमारी प्राचीन धार्मिक पुस्तकों में भी ऐसे आख्यान मिलते हैं जिनमें रचनाकार की कल्पनाशीलता आज की इस कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों की की अवधारणा से काफी मेल खाती है। यह निर्विवाद रूप से सच है कि उस समय में किसी भी रूप में ऐसी मशीनों का अस्तित्व नहीं था। पर रचनाकारों की कल्पना की उड़ान वहां तक जरूर पहुंचती थी। यह भी सच है कि उनकी कल्पनाओं और आज की परिष्कृत कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों के विकास के बीच भी कोई संबंध नहीं है। उनका आज की इन मशीनों के विकास में रंच मात्र भी योगदान नहीं है। पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस विज्ञान रेडियो धारावाहिक में उन कल्पनाओं का उल्लेख मनोरंजक होगा।

धारावाहिक की पिछली कड़ी में हमने अनुमानतः महर्षि वाल्मीकि रचित अद्वैत दर्शन की पुस्तक 'योग वशिष्ट' के ऐसे ही मजेदार काल्पनिक पात्रों से आपका परिचय कराया था। दम, व्याल और कट नाम के यांत्रिक योद्धाओं और कर्कटी नाम की राक्षसी पात्र से आपका परिचय कराया था। लगता है परिचयों की यह श्रृंखला अभी पूरी नहीं हुई है। चलिए आज अपनी कुछ और प्राचीन धार्मिक पुस्तकों को खंगालते हैं। देखते हैं कि कहां–कहां ऐसी कल्पनाएं की गई हैं जो इन मशीनों के सिद्धांतों से मेल खाती हैं? तो चलिए हमारे साथ अपने अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर और अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को साथ लेकर, इस रोमांचकारी खोजी यात्रा पर। पर अपने ऋषि और सारिका को भी तो साथ लेना है। हां उनके पुजारी वैज्ञानिक पिता तो साथ रहेंगे ही। पुजारी वैज्ञानिक मैंने इसलिए कहा कि उनकी धार्मिक पुस्तकों में रुचि तो है पर वह उनको पर उनको पढ़ते और समझते समय उनका दृष्टिकोण हमेशा वैज्ञानिक ही रहता है। तो चलें.....

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड़्स आउट)

पात्र

लंकिनी– **(रामायण का पात्र)**

हनुमान–**(रामायण का पात्र)**

पापा–**(आयु- 45)**

सारिका–**(पुत्री २१)**

ऋषि–**(पुत्र १९)**

शब्द दृश्य–एक

स्थान–घर का ड्राइंग रूम।

समय–प्रातः काल।

(टी.वी. पर रामायण का एक एपिसोड आ रहा है इसमें हनुमान लंका में प्रवेश करने वाले हैं। लंका के मुख्य द्वार पर हनुमान की भेंट वहां की द्वार–रक्षक 'लंकिनी' से होती है। जो उन्हें लंका में प्रवेश न करने की चेतावनी देती है।)

लंकिनी– सावधान मूर्ख वानर, जहां है वहीं खड़ा रह, यह लंकिनी का आदेश है। अगर एक पैर भी आगे बढ़ाया तो.....

हनुमान– तो क्या होगा माते?

लंकिनी– रुक, रुक, वहीं रुक। क्यों अपनी मृत्यु को बुला रहा है? अरे रुक ढीठ वानर, तू तो बढ़ता ही चला आ रहा है। क्या तुझे मृत्यु से डर नहीं लगता?

हनुमान– लगता तो है, पर आप मृत्यु देवी जैसी तो दिख नहीं रही हो।

लंकिनी– अरे मूढ़, अपने लिए तू मुझे मृत्यु देवी ही समझ। मैं लंकिनी हूं, लंका की रक्षक। मैं अहर्निश लंका में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति की निगरानी करती हूं। बिना मेरी आज्ञा के यहां से पवन भी लंका में प्रवेश नहीं कर सकती।

हनुमान– ओहो तो आप द्वारपाल हैं, महिला द्वारपाल? च.....च.....च, आपकी बड़ी कठिन ड्यूटी है । ठीक है एक तरफ से हटिए द्वारपालिका जी, मुझे लंका में अंदर जाना है।

लंकिनी– तो तू ऐसे नहीं मानेगा? अब भी बढ़ा चला आ रहा है। मुझे तेरी धृष्टता का कुछ तो सबक देना ही पड़ेगा। ये ले.....

(घूंसे की आवाज)

हनुमान– अरे, अरे, आप तो लड़ाई–झगड़े पर उतर आईं द्वारपालिका जी। बेकार गुस्सा ठीक नहीं होता।

(घूंसों की आवाज)

लंकिनी– अरे, आप तो आप तो मुझ पर घूंसे बरसाती ही जा रही हैं। कहीं मुझे भी क्रोध आ गया तो आपको भारी पड़ेगा।

लंकिनी– अच्छा, मुझे धमकाता है। तुझे मेरी विशालकाय काया से डर नहीं लगता? यह ले.....और ले.....

...

(घूंसों की आवाज)

हनुमान - *(गहरी सांस लेकर)*– ठीक है, अगर आप नहीं मानती तो ऐसे ही सही।

(एक घूंसे की तेज आवाज और लंकिनी की चीख सुनाई देती है)

हनुमान– अरे, रे, रे..... आप तो एक ही घूंसे में ही बोल गईं। क्षमा करना च.....च.....च.....च आपकी तो नाक ही पिचक गई। पहले ही समझा रहा था पर आप तो मानी ही नहीं। अब जरा किनारे हो जाइए। मुझे लंकाधिपति रावण से मिलना है। समय भी काफी कम है।

लंकिनी– *(कराहते हुए)*– तुम कौन हो महा बलशाली? देव, किन्नर, गंधर्व तो तुम हो ही नहीं सकते क्योंकि उनमें इतना साहस नहीं है कि वह लंकिनी के सामने टिक सकें। तुम हो कौन? अपना परिचय तो दो तात।

हनुमान– माते यह तुच्छ वानर, अयोध्यापति राम का एक छोटा सा दास है।

लंकिनी– छोटा सा दास और उसकी यह शक्ति? अगर तुम्हारे स्वामी स्वयं लंका पर चढ़कर आ गए तो क्या होगा? मैं जान गई लंका का सर्वनाश निश्चित है। जाओ तात, निर्भय होकर लंका में प्रवेश करो। तुम्हारा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड़्स आउट)

(पापा का प्रवेश)

पापा– क्या हो रहा है ऋषि, सारिका?

सारिका– पापा आजकल स्कूल तो जाना हो नहीं पा रहा है। धारावाहिक रामायण का पुनः प्रसारण प्रारंभ हो गया है तो सोचा इसी को देखते हुए वक्त बिताया जाए।

पापा– हां और इस छुट्टी के समय में यह मीडिया वाले अपनी पुरानी चीजों को रिसाइकिल करके वक्त बिता रहे हैं।

ऋषि– पर पापा रामायण की सीरियल को जितनी बार भी देखो उतना ही आनंद आता है। आज हनुमान और लंकिनी वाला प्रसंग था। क्या जबरदस्त फिल्माया है।

पापा– ऋषि तुम्हें क्या लगता है कि लंकिनी कोई हाड–मांस की औरत रही होगी? इतनी विशालकाय काया जो इतने बलशाली कहे जाने वाले पात्र को जो चुनौती दे सके?

सारिका– *(हंसती है)*– पापा तो आपको क्या लगता है, वह कोई रोबोट होगी?

ऋषि– इसमें हंसने की क्या बात है इतने बड़े शरीर की क्या कोई स्त्री हो सकती है?

पापा– हां और कोई पहरेदार क्या ऐसी हो सकती है जो 24सौं घंटे ड्यूटी दे सकती हो?

सारिका– हां ये तो है। लंकिनी के अलावा लंका के प्रवेश द्वार पर किसी और का नाम तो सुनने में नहीं आता है।

ऋषि– मतलब यह कि लंकिनी कोई जीती–जागती स्त्री नहीं कोई कृत्रिम बुद्धि युक्त रोबोट रही होगी।

पापा– रोबोट रही होगी **या** नहीं, रोबोट की कल्पना रही होगी क्योंकि रोबोट का तो तब नामोनिशान भी नहीं रहा होगा। पर रचयिता ने अनजाने में जो कल्पना की है वह एक कृत्रिम बुद्धि वाले रोबोट जैसी स्मार्ट मशीन से काफी मेल खाती है।

ऋषि– मेरे कहने का भी यही मतलब था पापा।

पापा– रामायण का एक पात्र मुझे हमेशा से बहुत चकित करता है। मैं उसके बारे में जितना सोचता हूं वह उतना ही रहस्यमयी होता जाता है।

सारिका– कौन, रावण?

पापा– न।

ऋषि– हनुमान?

पापा– वे भी नहीं, क्योंकि उनका सृजन तो स्वामिभक्ति और अपने बल पर अभिमान न करने की भावना का प्रदर्शन करने के लिए किया गया है।

सारिका– तो फिर कौन सा?

पापा– कुंभकर्ण।

सारिका और ऋषि– *(समवेत स्वरों में आश्चर्य से)*– क्यों पापा?

पापा– बताया गया है कि कुंभकरण 6 महीने सोता था और 6 महीने जागता था। वह तरह–तरह की दिव्य अस्त्रों, जिन्हें हम कृत्रिम बुद्धि युक्त मिसाइलों की कल्पना मान सकते हैं, उनका भी प्रयोग कर सकता था। वह महान बलशाली था। क्या तुम लोगों को लगता है कि यह कल्पना किसी हाड़–मांस के जीवित व्यक्ति पर फिट होती है?

ऋषि– यह तो आपने ठीक कहा पापा। पर 6 महीने सोने और जागने से इसका क्या मतलब?

सारिका– पापा इस तरह का तो कोई हाड़–मांस का प्राणी हो ही नहीं सकता है।

पापा– मुझे लगता है कि रचयिता ने सोचा तो एक कृत्रिम बुद्धि वाली भारी–भरकम मशीन के बारे में था पर वह उसकी वह आदतें मनुष्य की तरह की ही सोच पाया क्योंकि उस समय ऐसी मशीनों का अस्तित्व ही नहीं था।

सारिका– क्या मतलब?

पापा– एक आदमी जब मेहनत का काम करता है तो वह थक जाता है। उसे फिर से तरोताजा होने के लिए उतना ही समय चाहिए।

सारिका– जैसे कि हम लोग दिन में काम करते हैं और रात में सोकर तरोताजा हो जाते हैं।

ऋषि– और मजदूर लोग तो रात होते ही सो जाते हैं और सवेरे तक गहरी नींद सोते रहते हैं क्योंकि वह दिन भर बहुत मेहनत का काम करते हैं।

पापा– जो जितनी मेहनत करेगा उसे तरोताजा होने के लिए उतनी ही नींद चाहिए। इसीलिए रामायण के रचयिता ने सोचा कि अगर कोई पात्र 6 महीने लगातार काम करेगा तो उसे तरोताजा होने के लिए 6 महीने की ही नींद चाहिए। जबकि मशीनों में इस तरह की जरूरत ही नहीं होती है।

ऋषि– हो सकता है कि वह एक भारी–भरकम रोबोट रहा हो, जिसकी मेंटेनेंस इतनी महंगी हो कि उसे 6 महीने के लिए निष्क्रिय कर दिया जाता हो। क्योंकि उसके भोजन के बारे में जो कहा गया है उसे सुनकर तो ऐसा ही लगता है।

सारिका– या 6 महीने लगातार चलने से उसके पुर्जे घिस जाते हों और उसे फिर से रिपेयर करने में छह माह लग जाते हों।

पापा– नहीं नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं रहा होगा।

सारिका– क्यों, क्यों, आप ऐसा इतने विश्वास से कैसे कह सकते हैं?

पापा– वह इसलिए कि ऐसी मशीनें उस समय वास्तव में तो रही ही नहीं होंगीं। यह तो उनकी कल्पनाएं हैं। ऐसी मशीन जब सच में थी ही नहीं, तो काहे की मेंटेनेंस, काहे के पुर्जे? जैसे रामायण के रचयिता ने कल्पनाएं की थी तुम लोग तो उससे भी आगे की कल्पना ही करने लगे।

ऋषि– क्योंकि हमारे समय में ऐसी चीजें होती हैं। इसलिए हमारी कल्पनाएं रामायण के रचयिता के आगे से आगे ही आगे जा पहुंचीं।

सारिका– पापा रामायण का कोई और पात्र जो आपका पसंदीदा हो?

पापा– हां बाली, सुग्रीव का बड़ा भाई। यह बाली भी मुझे अजीब सा पात्र लगता है। क्योंकि यह हाड़–मांस के किसी जीव के कंसेप्ट में फिट ही नहीं होता।

ऋषि– ऐसा क्या पापा?

पापा– इसलिए की बाली के बारे में रामायण में लिखा है उससे जो कोई लड़ने आता था उसकी आधी शक्ति बाली में समा जाती थी।

सारिका– तभी तो श्रीराम ने उन्हें पेड़ों की ओट से, छिप कर मारा था।

पापा– मुझे लगता है मुझे रामानंद सागर का शुक्रिया अदा करना चाहिए क्योंकि उनकी वजह से तुम लोगों को रामायण की कितनी सारी जानकारी हो गई है?

सारिका– *(इतराते हुए)*– ऐसा भी नहीं है पापा।

पापा– आज सोचो क्या कोई ऐसा जीव हो सकता है जिसके सामने जाने पर आपकी आधी ताकत उसके अंदर चली जाए?

ऋषि– न।

पापा– मुझे तो लगता है कि यह तो हमारे समय से भी आगे की बात है जिसे रामायण के रचयिता ने उस समय सोच लिया था। बिजली के वायरलेस ट्रांसमिशन को एक देश में अब प्रायोगिक तौर पर शुरू किया गया है।

ऋषि– तो आप सोचते हैं कि भविष्य में ऐसी स्मार्ट मशीनें बनाई जा सकती हैं जो दूसरे मशीनों से वायरलेस तरीके से ऊर्जा ग्रहण कर लें?

पापा– बिल्कुल, अभी तो ये प्रायोगिक स्तर पर ही है जो आगे चलकर सामान्य व्यवहार में आ सकता है।

सारिका– मतलब ऐसी स्मार्ट मशीन की कल्पना भी रामायण के रचयिता ने कर ली थी।

पापा– यह कहना तो ठीक नहीं होगा पर उसने जो कल्पना की थी वह आज भविष्य में विकसित हो सकने वाली इस तरह की मशीन से काफी हद तक मेल खाती है। शायद इस की कल्पना

करते समय उसके मस्तिष्क में ऐसा कोई विचार भी न रहा होगा। क्योंकि उसे बाली को अजेय और अमर बनाना था इसलिए उसने इस तरह की कल्पना की होगी।

ऋषि– पापा मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि रामायण में कृत्रिम बुद्धि के कंसेप्ट को रामायण के रचयिता का कमाल मानूं या आपकी खोजी वैज्ञानिक दृष्टि का?

सारिका– दोनों का।

(सब हंसते हैं)

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड़स आउट)

शब्द दृश्य–दो

स्थान– घर का ड्राइंग रूम।

समय– सायंकाल।

(ऋषि और सारिका किसी बात पर बहस कर रहे हैं। बहस के शब्द साफ सुनाई नहीं देते। तभी दरवाजे की घंटी बजती है।)

ऋषि– लगता है पापा आ गए, सारिका जाकर दरवाजा खोल न।

सारिका– ऋषि भैया तुम ही देखो न।

ऋषि– *(दूर जाती आवाज़)*– आलसी कहीं की.....

(पापा का प्रवेश)

सारिका– पापा आप आ गए, मैं तो काफी देर से आपका इंतजार कर रही थी।

पापा– *(हंसते हुए)*– क्यों, क्या तुमने मेरे लिए खीर बना कर रखी है?

ऋषि– पापा आप भी न....., यह खीर बनाएगी? इसके तो मुंह पर मक्खी बैठ जाए तो उसको उड़ाने के लिए ऋषि भैया को ही बुलाएगी।

सारिका– ओहो, जैसे घर के सारे काम ऋषि भैया ही करता है?

ऋषि– और नहीं तो क्या?

पापा– अरे तुम लोग भी..... *(कुछ रुक कर)* हां यह तो बताओ सारिका कि तुम मेरा इंतजार क्यों कर रही थीं?

सारिका– पापा आज कल शाम को एक और पुराना धारावाहिक टी.वी. पर दिखाया जाने लगा है।

पापा– कौन सा?

ऋषि– पापा आपको नहीं पता, महाभारत।

पापा– अच्छा।

सारिका– आज उसमें एक पात्र का नाम था घटोत्कच।

पापा– हां सारिका यह पांडवों में से एक, गदाधारी भीम और एक राक्षसी हिडिंबी का पुत्र था। जन्म के समय इसके सिर पर बाल नहीं थे और इसका मस्तक हाथी जैसा सपाट या वाद्य यंत्र की

तरह बजाए जाने वाले घड़े या घटम् की तरह था इसलिए इसका नाम घटोत्कच रखा गया क्योंकि संस्कृत में 'उत्कच' का अर्थ होता है 'केशहीन'।

ऋषि– इंटरेस्टिंग!

पापा– महाभारत में उल्लेख है कि यह डील–डौल में काफी बड़ा था। इसके पास मायावी शक्तियां थी। जिससे यह अपने आकार को हजारों गुना बढ़ा सकता था। इतना बलशाली था कि अपने पैर की एक ठोकर से किसी रथ को बहुत दूर तक फेंक सकता था। महाभारत में यह पांडवों की तरफ से लड़ा था।

ऋषि– वह तो लड़ना ही था क्योंकि वह पांडव परिवार का सबसे बड़ा पुत्र था।

पापा– मृत्यु से पहले उसकी भिड़ंत कर्ण से हुई थी। कर्ण ने जब उस पर दिव्य अस्त्र चलाया तो मरते–मरते उसने अपना आकार इतना बढ़ा लिया कि गिरते–गिरते उसके नीचे एक अक्षौहिणी सेना दबकर मर गई।

सारिका– एक अक्षौहिणी, यह कितना होता है?

पापा– जो प्रमाण उपलब्ध हैं उनके अनुसार एक अक्षौहिणी सेना में 21,870 रथ, 21,870 हाथी, 65,610 घुड़सवार और 1,09,350 पैदल योद्धा होते थे।

ऋषि– इन सब का जोड़ हुआ करीब दो लाख 87 हजार योद्धा। इतने लोग घटोत्कच के शरीर के नीचे दब कर मर गए? असंभव, यह कोरी गप्प है।

पापा– हो सकता है कि इस विवरण में संख्याओं को बढ़ा–चढ़ाकर बताया गया हो। पर महाभारत के रचयिता की कल्पना की अनुसार मरते समय घटोत्कच ने अपना शरीर इतना बढ़ा लिया था कि योद्धाओं की एक बहुत बड़ी संख्या उसके शरीर के नीचे दबकर मर गई।

सारिका– तब फिर यह कोई हाड़–मांस का व्यक्ति नहीं ही रहा होगा?

पापा– यही तो मैं भी सोचता हूं कि यह किसी कृत्रिम बुद्धि युक्ति वाली पर्वताकार मशीन की कल्पना है जो सामान्य अवस्था में तुड़–मुड़ कर सामान्य आकार में रह सकती हो पर जब चाहे अपने आकार को बढ़ा सकती हो। साथ ही वह स्वयं यह निर्णय लेने में समर्थ हो कि उसे कब सामान्य आकार में रहना है और कब आकार को बढ़ा लेना है।

ऋषि– घटोत्कच के अत्यंत बलशाली, बड़े आकार वाले शरीर और अद्भुत शक्तियों के लिए उसकी मां को मायाविनी राक्षसी के रूप में गढ़ा गया होगा, है न पापा?

पापा– गनीमत है तुम अब बात समझने लगे हो।

सारिका– हां पहले तो भैया बुद्धू था, है न पापा?

ऋषि– तू तो अभी भी बुद्धू है, उसका क्या?

पापा– एक और इसी तरह का पात्र महाभारत में है, बर्बरीक।

सारिका– बर्बरीक कौन?

पापा– महाभारत के प्रसंग के अनुसार बर्बरीक घटोत्कच और अहिलावती का पुत्र था। कहते हैं कि उसको धनुर्विद्या उसकी मां ने सिखाई थी। उल्लेख है कि मां आदिशक्ति की तपस्या करके

उसने तीन बाण प्राप्त किए थे जो उसे तीनों लोकों में अजेय बनाते थे। उल्लेख है कि वह उस समय का दुनिया का सबसे महान धनुर्धर था।

ऋषि– अर्जुन से भी बड़ा?

पापा– महाभारत में तो यही लिखा है। उसमें एक प्रसंग आया है कि जब महाभारत का युद्ध प्रारंभ हुआ तो बर्बरीक अपने तरकश में तीनों तीर डालकर इस युद्ध में शामिल होने के लिए चल दिए। वह एक न्यायप्रिय व्यक्ति थे, पांडवों का सबसे सबसे बड़ा पुत्र होने के बावजूद उन्होंने घोषणा की कि जो पक्ष इस युद्ध में हार रहा होगा मैं उसकी तरफ से युद्ध करूंगा। पर केवल तीन तीरो वाला तरकस लिए बर्बरीक की बातों पर किसी ने विश्वास नहीं किया।

सारिका– आगे क्या हुआ पापा?

पापा– श्रीकृष्ण ने बर्बरीक की क्षमता के बारे में सुना था। पर वह परीक्षा कर यह जान लेना चाहते थे कि वह व्यक्ति बर्बबरीक ही है। इसीलिए श्रीकृष्ण ब्राह्मण का रूप रखकर उसके पास पहुंचे और उसकी हंसी उड़ाई कि वह केवल तीन तीर लेकर महाभारत में शामिल होने आया है तो बर्बरीक ने कहा कि उनका एक बाण ही महाभारत के सारे वीरों का अंत करके वापस उसके तरकश में आ जाएगा। अगर उन्होंने तीनों तीरों का प्रयोग कर दिया तो तीनों लोको में हाहाकार मच जाएगा।

ऋषि– क्या? वे बाण थे या परमाणु बम?

पापा– यह किसी विनाशकारी परमाणु मिसाइल की कल्पना जैसी ही लगती है। पर श्रीकृष्ण पक्का कर लेना चाहते थे कि यह योद्धा बर्बरीक ही है। जानती हो सारिका उन्होंने यह कैसे तय किया?

सारिका– कैसे?

पापा– उन्होंने बर्बरीक से कहा कि यदि ऐसा है तो वह सामने वाले पीपल के सारे पत्तों को छेद कर बताएं। बर्बरीक ने अपने तरकश से तीर निकाला और चला दिया। उल्लेख है कि तीर ने एक ही क्षण में पेड़ के सारे पत्तों को छेद दिया और अंततः श्रीकृष्ण के पेड़ के पास आकर चक्कर लगाने लगा। श्रीकृष्ण ने चौंक कर देखा तो एक पीपल का पत्ता उनके पांव के नीचे दबा था।

ऋषि– मतलब यह कि ये बाण सिर्फ परमाणु मिसाइल ही नहीं वरन कृत्रिम बुद्धि युक्त परमाणु मिसाइल की कल्पना थी?

पापा– ब्राह्मण बने श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से दान की इच्छा प्रगट की। बर्बरीक ने कहा ब्राह्मण देवता जो चाहिए मांग लो।

सारिका– अच्छा।

पापा– ब्राह्मण बने श्रीकृष्ण ने कहा अगर मैंने मैंने मांगा और आप न दे पाए तो? बर्बरीक ने कहा आप मांगो तो मैं आपको खाली हाथ वापस नहीं जाने दूंगा। जानते हो श्रीकृष्ण ने क्या मांगा?

सारिका– उसके तीनों तीर?

पापा– नहीं, श्रीकृष्ण ने उससे युद्ध भूमि की पूजा हेतु उसका सिर ही मांग लिया।

सारिका– आश्चर्य से क्या?

पापा– हां और धर्मात्मा बर्बरीक इसके लिए राजी हो गए। पर उन्होंने श्रीकृष्ण से महाभारत युद्ध देखने की इच्छा प्रकट की। प्रसंग के अनुसार श्रीकृष्ण ने उनका सिर काट कर वहीं पास की एक पहाड़ी पर स्थापित कर दिया। जहां से उन्होंने पूरा महाभारत देखा और वहीं से वह वीर गर्जना करते रहे।

सारिका– यह तो महाभारत का अजीब सा पात्र है।

पापा– इसके बदले में श्रीकृष्ण ने उन्हें वरदान दिया कि उन्हें बाद में श्रीकृष्ण के नाम से ही जाना और पूजा जाएगा। कहते हैं कि खाटू श्याम ही महात्मा बर्बरीक ही हैं, जिनकी आज भी पूजा होती है।

सारिका– क्या कटा सिर वीर गर्जना करता रहा? तब बर्बरीक हाड़–मांस कोई प्राणी कैसे हो सकता है?

ऋषि– इसका मतलब यह एक कृत्रिम बुद्धियुक्त ऐसी मशीन की कल्पना है जिसको डिस्मेंटल करने पर भी वह थोड़े से इनपुट ले सकती है और सिर उसका सी.पी.यू. रहा होगा।

पापा– ऋषि बहुत देर बाद तुमने अक्ल की एक बात की है। रचयिता की कल्पना को इसी आधार पर एक्सप्लेन किया जा सकता हूं।

सारिका– सीरियल में अभी दिखा रहे थे कि जब अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा के कारण चिता में प्रवेश कर रहे थे तभी उनके सामने जयद्रथ आ गया। श्रीकृष्ण ने कहा अर्जुन देखते क्या हो जयद्रथ का वध कर दो। पापा यह जयद्रथ.....?

पापा– महाभारत के अनुसार जयद्रथ सिंधु देश का राजा और कौरवों की एक मात्र बहिन दुशाला का पति था। उसके पिता का नाम वृद्धछत्र था। जयद्रथ को यह वरदान प्राप्त था कि जो उसके सिर को पृथ्वी पर गिराएगा उसके सिर के सौ टुकड़े हो जाएंगे। एक बार जब अर्जुन की अनुपस्थिति में अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु द्रोणाचार्य के चक्रव्यूह में फस गया तो जयद्रथ ने उस पर पीछे से प्रहार करके उसको मार डाला था। यह सुनकर अर्जुन ने क्रोध में प्रण किया कि या तो अगले दिन वह जयद्रथ को मार डालेगा या फिर स्वयं आत्मदाह कर लेगा।

सारिका– अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र था न?

पापा– हां, अगले दिन जब शाम होने तक अर्जुन जयद्रथ को नहीं मार पाए तो श्रीकृष्ण ने अनिष्ट को टालने की लिए अपनी माया से सूर्य को बादलों में छिपा दिया। शाम होने लगी। दिन समाप्त होने पर अर्जुन आत्मदाह की तैयारी करने लगे। तमाशा देखने के लिए जयद्रथ भी वहां आकर हंसने लगा। तभी श्री कृष्ण ने माया हटा ली सूर्य बादलों से निकला।

सारिका– फिर तो जयद्रथ गया काम से?

पापा– अर्जुन ने बाण मार कर जयद्रथ का सिर धड़ से अलग कर दिया और बाण के साथ कुरुक्षेत्र के बाहर तपस्या कर रहे जयद्रथ के पिता की गोद में गिरा दिया। जैसे ही जयद्रथ के पिता हड़बड़ा कर उठकर खड़े हुए वैसे ही जयद्रथ का सिर उनकी गोद से नीचे गिरा और जयद्रथ के पिता के सिर के सौ टुकड़े हो गए।

ऋषि– पर पापा ऐसा कैसे हो सकता है?

सारिका– हो सकता है। लगता है महाभारत के रचयिता ने जयद्रथ के रूप में एक कृत्रिम बुद्धि वाली ऐसी मशीन की कल्पना की थी जिसके सिर जैसी रचना में विस्फोटक भरे थे जो नष्ट होते होते अपने आसपास के योद्धाओं का विनाश कर सकती थी।

पापा– वाह सारिका वाह, क्या एक्सप्लेनेशन दिया है बिल्कुल वैज्ञानिक।

ऋषि– आखिर बहन किसकी है?

(दृश्य परिवर्तन संगीत..... फेड़स आउट)

नैरेटर– दोस्तो विज्ञान रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' की आज की कड़ी में आपने सुना रामायण और महाभारत की उन कल्पनाओं के बारे में, जिनका विवरण संयोग से आज की कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों से काफी मेल खाता है। पर ध्यान रखें यह सिर्फ कल्पनाएं थी, वास्तविकता में तब ऐसा कुछ नहीं था।

विज्ञान रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' की अगली कड़ी में हम आपका परिचय कराएंगे भारतीय विज्ञान कथा साहित्य की कुछ ऐसी कहानियों से जिनमें कृत्रिम बुद्धि वाली अवधारणा का बखूबी इस्तेमाल किया गया है। तो सुनना न भूलिएगा वीडियो विज्ञान धारावाहिक 'आने वाला कल' की अगली कड़ी, आज के ही दिन आज के ही समय। तब तक के लिए नमस्कार।

————————————————